वेदों में राजनीति विज्ञान के तत्त्व

Niraj Kumar Singh

E.T.-62, Amirpur State, Kanpur-09

Abstract

In fact, to day entire world has war-mly accepted the scientific thinking of Indian Vedic system. Religious, linguistic, cultural, social, medical, political and literary view of Vedic era has dceply influenced human conciousness. Vedas clearly mention that Aryans were familiar with the view of nationality and patriotism. Atharveda scientifically discuse political view of Vedic period. A summary of political system has clearly defined in this paper. Atharveda define well estableshed political system of Aryan era. In Atharved word 'Rajya' has been used seventimes as well as word 'Rashtra' fiftyeight times According to Athorveda four important elements of rashtra are bhubhay, Vish, chhatra and bramha. Rashtra is most important organiztion in Atharveda, and it is obtained with the special blese of God. Raja (king) was the care taker of rajya, infact Rashtra and Rajya used simltaneously in Atherveda.

भारतीय विद्या के क्षेत्र में वैदिक अध्ययन और शोध का महत्त्व आज विश्व व्यापी स्तर पर स्वीकार किया जाता है। व्यापक वैदिक वाङ्मय से धर्म, दर्शन, भाषा, संस्कृति, समाजशास्त्र, सृष्टि विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, राजनीति विज्ञान और साहित्य की अनेक धाराएं प्रवाहित होकर मानवीय चेतना को उद्‌बुद्ध करती रही हैं। विशाल वैदिक वाङ्मय मुख्यत: आर्यो के सांस्कृतिक जीवन का परिचायक है। उनके राजनीतिक जीवन की जानकारी यहाँ उपलब्ध होती है। वेदों के अनुशीलन से यह ज्ञात होता है कि वैदिक आर्य शासन दृष्टि से एक सुव्यवस्थित राष्ट्र के अधीन थे। उन्होंने राष्ट्र के स्वरूप और उसके तत्वों की स्पष्ट कल्पना की थी। ***वेदों में राष्ट्र की महानता से प्रेरित वैदिक आर्यों के हृदय में उद्‌बुद्ध राष्ट्रीय भाव और उत्कृष्ट देश प्रेम के संकेत भी वैदिक मन्त्रों में प्राप्त हैं।***

चारों वेदों में अथर्ववेद का राजनैतिक वैशिष्ट्य अधिक है। इसमें अनेक राजकर्म से सम्बन्धित सूक्त हैं। अथर्ववेद में जिन अनेक शान्तिदायक और प्रजाहितकारी कार्यों का वर्णन है, उनमें ग्राम, नगर, दुर्ग और राष्ट्र की शत्रु से अभिरक्षा का उल्लेख है। इसमें राष्ट्ररक्षा नियमों की प्रौढ़ता इसके 'क्षत्रवेद' नाम का आधार है। इसमें न केवल तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों का वर्णन है बल्कि इसमें आर्यों में विद्यमान राष्ट्रीय भावना की प्रथम अभिव्यक्ति है। ऋग्वेद में प्रतिबिम्बित आर्यों के राजनैतिक जीवन के मुख्य पक्ष हैं-आर्यों के दास-दस्यु आदि से किये गये विभिन्न युद्ध और उनमें विजय के लिये इन्द्र से की गई प्रार्थनाएं। वैदिक ऋचाओं में अनेक राजाओं का उल्लेख है, जिससे स्पष्ट है कि ऋग्वैदिक काल में सम्पूर्ण देश विभिन्न स्वतन्त्र प्रशासनिक मण्डलों में विभक्त था। ***राजनैतिक व्यवस्था के अन्तर्गत ऋक्संहिता में कुल, ग्राम, विश, जन, राष्ट्र आदि की चर्चा है। यहां केवळ एक बार 'राजा' और दस बार 'राष्ट्र' शब्द का प्रयोग किया गया है। मैकडानल तथा कीथ ने अधिकांशत: 'राष्ट्र' शब्द को राज्य (Kingdom) या 'राजकीय क्षेत्र' (Royal territory) का वाचक माना है[2] किन्तु राजा द्वारा राष्ट्र के अधिपतित्व[3] या रक्षण[4] के वर्णनों से ऋग्वेदीय राष्ट्र का क्षेत्रीय स्वरूप स्पष्ट नहीं होता। दशम् मण्डल में राजा के निर्वाचन के सन्दर्भ में उसे राष्ट्र का स्वामी कहा गया है। और कामना की गई है कि सारी प्रजाएं (विश:) उसे चाहें और 'राष्ट्र' उससे वियुक्त न हो जाय[5], वह इन्द्र के समान स्थिर होकर राष्ट्र को धारण करे[6] मात्र इससे ही 'राष्ट्र' में प्रादेशिक तत्व की परिकल्पना संकेतित होती हैं ऋक्संहिता में लगभग २७५ बार 'जन' और १७० बार 'विश' शब्दों के प्रयोग से जनजातीय प्रमुखता का बोध होता है। अत: निश्चित रूप से 'जन' सर्वोच्च सामाजिक इकाई थी और इनका सामाजिक संगठन जनजातीय अवस्था को पार नहीं कर पाया था। ऋग्वैदिक सरदारों के मन में क्षेत्रीय राज्य की कोई कल्पना नहीं थी और ऋग्वेदिक राज्य मुख्यत: जनजातीय संस्था थी।***[7]

अथर्ववेद में राष्ट्र का स्वरूप-अथर्ववेद में वैदिक युग के राजनैतिक जीवन की अपेक्षाकृत विकसित अवस्था का परिचय मिलता है। ***राजनैतिक शब्दों में यहाँ विश, क्षत्र, राज्य और राष्ट्र उल्लेखनीय हैं। विश का प्रयोग विशेषत: जन, प्रजा[8] या***

Vijnana Bharati

राष्ट्रवासियों के अर्थ में किया गया है। 'क्षत्र' शब्द प्रभुत्व, शक्ति नेतृत्व, आधिपत्य, शासन आदि अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। मन्त्र में उल्लेख है कि राजा द्वारा अपमानित ब्राह्मण राजा के नेतृत्व को नष्ट कर देता है।[९] अन्यत्र 'क्षत्र' से क्षत्रिय[१०], बल[११], शक्ति[१२] आदि का अभिप्राय प्रकट होता है। अथर्ववेद में सात बार राज्य और लगभग अट्ठावन बार राष्ट्र शब्द का प्रयोग हुआ है। इसी के अनुरूप यहाँ वैदिक आर्यों की 'राष्ट्र' परक दृष्टि और परिकल्पना विशद है। ***राज्य सामान्यतः 'सार्वभौम सत्ता' के अर्थ में आया है तो राष्ट्र राज्य का वाचक है।[१३] राज्य और राष्ट्र शब्दों के सहप्रयोग से उनका अर्थगत भेद भी स्पष्ट होता है।[१४] अथर्ववेद में विभिन्न राजनैतिक संगठनों में राष्ट्र (राज् दीप्तौ + ष्टन्) सर्वोच्च था। राष्ट्र की प्राप्ति देवों की कृपा पर आधारित थी।[१५] राजा 'राष्ट्र' की रक्षा करता था।[१६] अतः सामान्य रूप से राज्य ही राष्ट्र था।***

एक निश्चित भूभाग, एक जन समूह, उनकी एक साथ मित्रतापूर्वक रहने की इच्छा और सांस्कृतिक एकता आदि राष्ट्र के प्रमुख तत्व हैं। यास्क ने भी सम्भवतः अलग-अलग मनुष्यों के संस्थानैकत्व तथा सम्भौगैत्व (दुर्गाचार्य-इतरेतरोपकारित्वम्) को राष्ट्र के लिये आवश्यक माना गया है।[१७] ऋग्वेद में 'राष्ट्र' का जनजातीय स्वरूप अधिक प्रबल है, जबकि अथर्वेद में इसका प्रादेशिक स्वरूप भी उजागर होता है। राजा के निर्वाचन-गान में अथर्ववैदिक ऋषि की कामना है कि 'राष्ट्र' राजा के अधिकार में रहे और वरुण, बृहस्पति, इन्द्र और अग्नि उसे राजा के लिये ध्रुवभाव के स्वरूप आदि की चर्चा की है। वहाँ अधिकांशतः 'हमारी भूमि' से हमारे राष्ट्र का अर्थ ग्राह्य है। एक मन्त्र में तो स्पष्ट रूप से पृथिवी देवी से राष्ट्र में तेज और बल को स्थापित करने की प्रार्थना है।[१९] राष्ट्र के जनत्व और क्षेत्रीय तत्व को अभिव्यक्त करते हुये प्रार्थना की गई है कि 'हे मातृभूमि! जो मनुष्य तुम्हारे में ही पैदा हुये हैं, तुम पर ही चलते-फिरते हैं, तुम उनका पालन करती हो।[२१] यदि 'वैश्वानरम्' का अर्थ 'सब भाँति के मनुष्यों का समूह' (सातवलेकर के अनुसार) लिया जाय, तो 'वैश्वानरं बिभ्रती भूमिः'[२२] से भी भूमि और जन समूह का समुच्चय रूप राष्ट्र व्यंजित होता है। 'राष्ट्र' के मूर्त तत्व का उल्लेख करते हुये ऋषि ने पृथ्वी से विशाल स्थान की कामना की है।[२३] उसी प्रकार अन्यत्र वरुण वायु और अग्नि से प्रार्थना की है कि वे हमारे लिये विशाल और निवास योग्य राष्ट्र बनावें।[२४] कहा जा सकता है कि भूमिसूक्त में मातृभूमि के उपासक ने भूमि के भौतिक और प्राकृतिक स्वरूप के चित्रांकन के साथ-साथ राष्ट्र के भौगोलिक तत्व की मीमांसा प्रस्तुत की है। जैसे हमारी मातृभूमि विश्वम्भरा, वसुधानी तिरण्यवत्ता और विश्वगामी है।[२५] यह विविध शक्तिशाली औषधियों को धारण करती है।[२६]

अथर्ववेद में निश्चित रूप से राष्ट्र केवल 'देश' या केवल 'जनता' का प्रतीक नहीं है। और न ही यहाँ राष्ट्र से केवल भूमि के एक भाग में रहने वाले मनुष्य समाज का बोध ही अभीष्ट है। 'राजते तत् राष्ट्रम्' व्युत्पत्ति के अनुसार जो चमकता है, वह राष्ट्र है। अथर्ववेदीय मन्त्रों में ऋषियों द्वारा राष्ट्र के कुछ अन्य विशिष्ट और अमूर्त तत्वों का संकेत किया गया है जिनमें ब्रह्मतेज (ब्रह्मा) पराक्रम (क्षत्र) की कामना की गई है। वशिष्ठ ऋषि ने 'अजर क्षत्र' की कामना करते हुये कहा है "मैं राजा के राष्ट्र को सामर्थ्यवान बनाता हूँ। मैं इसकी सेना के ओज-वीर्य-बल को तीक्ष्ण करता हूँ।[२७] सच्चे वीरों से युक्त इसके राष्ट्र को मैं सर्वथा अभिबर्धित करता हूँ। इसका क्षत्र सर्वथा अक्षय हो। इसी प्रकार ब्रम्ह-बल के साथ-साथ वीर्य बल की तीक्ष्णता भी प्रार्थनीय है।[२८] 'ब्रह्म' द्वारा शत्रुओं का नाश होता है।[२९] अन्यत्र राष्ट्र में (ब्रह्म) तेज के नाश और वीर्य के अभाव के प्रति चिन्ता व्यक्त की गई है।[३०] जिससे वैदिक राष्ट्र के लिये इनकी अनिवार्यता सूचित होती है। एक मन्त्र में राजा को ब्रम्ह और क्षत्र की उन्नति के लिये आदेश दिया गया है।[३१] अतः अथर्ववैदिक दृष्टि में राष्ट्र का स्वरूप भूभाग, विश, क्षत्र और ब्रह्म इन चार तत्वों से विशेषतया विनिर्मित होता है।

विश्वनाथ प्रसाद वर्मा ने अथर्ववेदीय ५/१७ सूक्त का विश्लेषण करते हुये लिखा है[३२] कि इन मन्त्रों के अनुशीलन से हमें इस तत्व का ज्ञान होता है कि राष्ट्र के अन्तर्गत किन-किन कारकों का संग्रह किया जा सकता है-

१. क - वीर पुरुष
   ख - पञ्च मानव, मनुष्य
   ग - राजा, राजन्य, ब्राह्मण वैश्य
२. विकर्ण पृथुशिरा (वृषभ)
   श्वेत कृष्ण वर्ण (अश्व)
   पृश्नि, धेनु, अन ड्वान
३. क्षेत्र (पुष्करिणी)

अथर्व संहिता में राष्ट्रनिर्माण का श्रेय ऋषियों की तपश्चर्या को दिया गया है। एक मन्त्र में कहा गया है कि कल्याण की इच्छा करने वाले आत्म ज्ञानी ऋषि प्रारम्भ में तप और दीक्षा का

Vijnana Bharati

आचरण करने लगे, उससे राष्ट्र हुये और बल तथा ओज भी उत्पन्न हुआ।[३३] अन्यत्र भी मातृभूमि की स्तुति के सन्दर्भ में पूर्वकालिक ऋषियों का स्मरण किया गया है।[३४]

राष्ट्र की महत्ता और श्रेष्ठता से प्रभावित हृदय में स्वराष्ट्र के प्रति अनेकों उदात्त भावनाएं उद्भूत होती हैं। राष्ट्रीय भावना एक अन्तर्जात प्रवृत्ति है। अथर्ववेदीय मन्त्रों में राष्ट्रीय भाव से सम्बद्ध उपर्युक्त प्रमुख तत्वों की प्राप्ति से अथर्ववेद में 'राष्ट्र' और उसकी सत्ता प्रमाणित होती है। आज भारतवर्ष में बच्चों को यह बताया जाता है कि ***अपने देश में राष्ट्रीयता की भावना का विकास अंग्रेजों के आगमन के पश्चात हुआ है। जबकि यह एक गलत तथ्य है। 'अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम्'*** जैसे वेद मन्त्र यह सिद्ध करते हैं कि भारत में 'राष्ट्र' की परिकल्पना व राष्ट्रीयता की भावना का विकास सदियों पहले हो चुका था।

सन्दर्भ-

१. शतपथ ब्राम्हण १४/८/१४/१-४, बृह.उप.५/१३/४, एम ब्लूमफीहड, अथर्ववेद एवं गोपत ब्राह्मण, अनु. डॉ.सूर्यकान्त, १९६४, पृष्ठ १५२; एम-ब्लमकीहउ, ह्यूमन आफ द अथर्ववेदात (एस.बी.ई वाल्यूम-४२) इन्ट्रोजक्शन, पृ.२५

२. एम.ए. मैकडोनाल्ड एण्ड ए बी कीथ वैदिक इन्डेक्स आफ नेम्ब एण्ड सब्जेट्स वाल्यूम् २, १९६७, पृ.२२३

३. ऋग्वेद - १०/१२४/५

४. ऋग्वेद - १०/१०९/३

५. ऋग्वेद - १०/१७३/१

६. ऋग्वेद - १०/१७३/२

७. रामशरशर्मा, प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचार एवं संस्थाएं, १९७७ पृ.-२७३-७६

८. अथर्ववेद - १४/२/२७, ३/४/२

९. अथर्ववेद - ५/१८/१४

१०. अथर्ववेद - ४/२२/२

११. अथर्ववेद - ६/१८/२

१२. अथर्ववेद - ६/५४/१

१३. सूर्यकान्त, वैदिक कोश, १९६३, पृ. ४४५-४४६

१४. अथर्ववेद - ३/४/२

१५. अथर्ववेद - १३/१/३५

१६. अथर्ववेद - ६/८७/१

१७. तत्र संस्थानैकत्वं सम्भौगैकत्वं चोपेक्षितव्यम् । तत्रैतन्नरराष्ट्रमिव, नि.७/५/८-२

१८. अथर्ववेद - ६/८८/२

१९. अथर्ववेद - १२/१/८

२०. अथर्ववेद - १२/१/१८

२१. अथर्ववेद - १२/१/५

२२. अथर्ववेद - १२/१/६

२३. अथर्ववेद - १२/१/१

२४. अथर्ववेद - ३/८/१

२५. अथर्ववेद - १२/१/६, १२/१/२६, १२/१/४३

२६. अथर्ववेद - १२/१/२

२७. अथर्ववेद - ३/१९/२

२८. अथर्ववेद - ३/१९/५

२९. अथर्ववेद - ३/१९/१

३०. अथर्ववेद - ३/१९/३

३१. अथर्ववेद - ५/१९/४

३२. विश्वनाथ प्रसाद वर्मा, वैदिक राजनीतिशास्त्र, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, १९७५, पृष्ठ-११८.

३३. अथर्ववेद १९/४१/

३४. अथर्ववेद - १२/१/३९

Vijnana Bharati